साधो सब्द साधना कीजै।
जेही सब्द ते प्रगट भये सब, सोइ सब्द गहि लीजै।।

जिस मूल ध्वनि से हम सब आए हैं, उसी मूल ध्वनि में उतर जाओ। उसी में सीढ़ियां लगाओ।
जेही सब्द से प्रगट भये सब, सोई सब्द गहि लीजै।
सब्द गुरु सब्द सुन सिख भये, सब्द सो विरला बुझै।

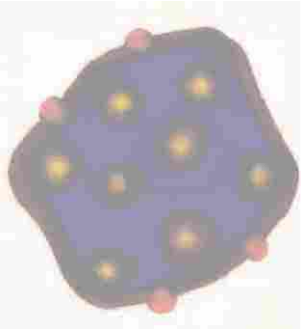

शब्द ही गुरु है। वह जो तुम्हारे भीतर पड़ी शांत ध्वनि, मौन प्रतीक्षा करती, वही गुरु है। वही सदगुरु है। बाहर का गुरु तो उसी की याद दिलाता है। बाहर का गुरु तो तुम्हें वहीं-वहीं फेंकता है वापस, तुम्हारे ही भीतर फेंकता है। जो गुरु तुम्हें बाहर अटका ले, वह गुरु नहीं—दुश्मन है। जो गुरु तुम्हीं में फेंक दें, वही सच्चा गुरु है। जो कहे : मुझे छोड़ो और अपने भीतर जाओ। मुझे मत पकड़ो। मुझे पकड़कर रुक मत जाना। क्योंकि मैं भी बाहर हूं। मुझसे तो इतना सीख लो कि कैसे भीतर जाया जाता है, फिर अपने भीतर चले जाओ। फिर बिसारो सब। गुरु भी सम्मिलित है उस बिसारने में। संसार भी भूल जाए; गुरु भी भूल जाए; धर्म भी भूल जाए—सब भूल जाए; विस्मृति पूरी हो जाए। जब बाहर की विस्मृति पूरी हो जाती है, तो स्मरण आता है भीतर का।

ये दोनों बातें एक साथ नहीं हो सकती। तुम्हारी ऊर्जा बाहर उलझी है, तो भीतर की कैसे स्मृति आए! बाहर से जब सारी ऊर्जा मुक्त हो जाती है, तो फिर क्या याद करोगे? कुछ याद करने को बचता नहीं, तो स्वयं को याद

साधो सब्द साधना कीजै

जो गुरु तुम्हें बाहर अटका ले, वह गुरु नहीं—दुश्मन है। जो गुरु तुम्हीं में फेंक दें, वही सच्चा गुरु है। जो कहे : मुझे छोड़ो और अपने भीतर जाओ। मुझे मत पकड़ो। मुझे पकड़कर रुक मत जाना। क्योंकि मैं भी बाहर हूं।

करोगे। जब कुछ और नहीं रह जाता खोजने को, तो आदमी स्वयं को खोजता है। जब और कहीं खोदने को कोई जगह नहीं बचती, तब आदमी स्वयं के खजाने को खोदता है।

'सब्द गुरु सब्द सुन सिख भये...।' शब्द ही गुरु है। और जिसने शब्द को सुन लिया, वही शिष्य, वही सिक्ख।

नानक के शिष्यों का नाम सिक्ख पड़ गया, क्योंकि पंजाबी में शिष्य का रूप हो जाता है सिक्ख। लेकिन सिक्ख का अर्थ होता है—शिष्य—जो उनके पास बैठने को राजी है, जिसने भीतर का मूल स्वर सुन लिया।

'सब्द सो विरला बुझै।' और कोई विरला ही कभी इस शब्द को बुझ पाता है। लेकिन वही बूझ सकता है जो इस भीतर की यात्रा पर चलता ही रहे।

मैंने सुना है, उन दिनों आगरा के कवि नजीर अकबराबादी गरीबी के गाल में समाए जाते थे। यह बात नवाब हैदराबाद को मालूम हुई, तो उन्होंने तुरंत ही अपना आदमी उन्हें हैदराबाद ले आने के लिए भेजा। वह आदमी जब आगरा पहुंचा और नजीर से मिला, तो नजीर बोले, 'मियां, हैदराबाद से क्या हमें ताजमहल दिखेगा?' यह भी कोई बात हुई! कहां हैदराबाद? कहां आगरा?

और नजीर बोले कि 'चल तो सकता हूं, मगर ताजमहल दिखेगा वहां से कि नहीं दिखेगा?' वह आदमी बोला, 'हां-हां क्यों नहीं दिखेगा? आप चलिए तो।'

वह तो उन्हें हर सूरत में साथ ले आने के लिए आया था और जब आने लगा था, तो नवाब हैदराबाद ने कहा था कि 'मैंने सुना है, नजीर पागल है ताजमहल के पीछे। वह जरूर कहेगा। ताजमहल की ही बात अड़चन उठायेगा; और कुछ नहीं है उसके पास वहां। भूखा मर रहा है। उसे ले आना जरूरी है—बचाने के लिए। लेकिन वह ताजमहल की बात उठाएगा तो तू फिक्र मत करना। कहना कि ठीक है। सब हो जायेगा। वह कुछ भी कहे, हां भर देना। किसी तरह उसे ले आना।

उन दिनों रेलों मोटरों का तो जमाना था नहीं। हाथी पर बैठाकर नजीर को यात्रा शुरू कराई गई। चलने का दिन आया, तो नजीर हाथी पर उलटे मुंह बैठ गए। आदमी जरा हैरान हुआ कि सुना तो था कि कवि झक्की और सनकी होते हैं। बाकी यह क्या मामला है! पर वह चुप रहा; किसी हाल चले-चलें। बस, ठीक है। उलटे बैठे हैं; चलो, उलटे सही।

हाथी चला। नजीर टक-टकी बांधे ताज को देखे जा रहे थे। हाथी जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया, ताज उनकी नजरों में धुंधला और धुंधला गया।

जब ताज दीखना बिलकुल बंद हो गया, तो नजीर उचक कर महावत से बोले, 'मियां, रोक लो यहीं अपना हाथी। जब इतने पास से हमें ताजमहल नहीं दीख रहा है तो भला हैदराबाद से क्या दीखेगा?'

नवाब के आदमी ने उन्हें बहुत समझाया, मगर ताज से प्यार करने वाले खूब-सूरती पसन्द नजीर कहां मानने वाले थे! वे तो हाथी से उतर पड़े और पैदल ही आगरा लौट गए।

गुलशन-परस्त हूं, गुल ही नहीं अजीज।
कांटों से भी निबाह किये जा रहा हूं मैं।।

जिसको बगीचे से प्रेम होता है, फूलों से प्रेम होता है—'गुलशन-परस्त हूं, गुल ही नहीं अजीज।' उसे फूल ही प्यारे नहीं होते, वह कांटों से भी निबाह कर लेता है।

गुलशन—परस्त हूं, गुल ही नहीं अजीज।
कांटों से भी निबाह किये जा रहा हूं मैं।।

लौट आए। भूखे रहे। गरीब रहे। बिना छप्पर के रहे। मगर वे ताजमहल छोड़ कर न गए।

ऐसी ही अंतर्यात्रा है। तुम जैसे-जैसे बाहर का शोरगुल छोड़कर भीतर जाने लगोगे, वैसे-वैसे भीतर का ताजमहल दिखाई पड़ना शुरू होगा। जैसे-जैसे तुम बाहर की तरफ जाओगे, भीतर का ताजमहल दिखाई पड़ना बंद हो जाएगा।

भीतर अपूर्व सौंदर्य है, लेकिन तुम बहुत दूर पड़ गए हो। तुम अपने ही हाथ बड़े दूर चले गए हो। और जिसने एक बार भीतर का संगीत सुन लिया, फिर उसे कोई लाख कहे, वह गरीब रह लेगा, वह भूखा रह लेगा, वह प्यासा रह लेगा, वह फकीर बन जाएगा, मगर उस भीतर के ताजमहल को छोड़कर न जाएगा, क्योंकि वही परम संपदा है।

सब्द गुरु सब्द सुन सिख भये, सब्द सो बिरला बुझै।
सोई सिष्य सोई गुरु महातम, जेही अंतर-गति सूझै।

यह अंतर में जाने की जो बात है, जिसे सूझ जाए—वही शिष्य है। और वही एक दिन गुरु बन जाता है। और शिष्य और गुरु के बीच जो अपूर्व घटना घटती है, वह और कुछ नहीं है—अंतर-गति है।

— ओशो
कहै कबीर मैं पूरा पाया
तेरहवां प्रवचन
(पूरा प्रवचन टेप में भी उपलब्ध है)